बाल महाभारत कथा

‘अंबा और भीष्म’

(मॉड्यूल-2/2)

महाभारत कथा

संदर्भ–प्रसंग भाग 2

अधोलिखित गद्यांश 'बाल महाभारत कथा' पुस्तक के 'अंबा और भीष्म' नामक पाठ के भाग 2 से उद्धृत है। इस पाठ की कथावस्तु का मुख्य आधार 'महाभारत' नामक ग्रन्थ है। जिसका रचनाकार 'महर्षि वेदव्यास' को माना जाता है।

इससे पूर्व के भाग 1 तक की कथावस्तु में चित्रांगद की युद्ध में मृत्यु एवं विचित्रवीर्य का राजा बनना परंतु आयु कम होने की वजह से भीष्म का राज–काज संभालना। खबर पाकर भीष्म का काशीनरेश की कन्याओं के स्वयंवर में जाना तथा तीनों बेटियों को स्वयंवर से जीतकर हस्तिनापुर लाना। बड़ी बेटी अंबा के आग्रह पर उसे उसके मनोतीत पति सौभराज शाल्व के पास भेजकर अंबिका और अंबालिका का विवाह विचित्रवीर्य से करा देना। अंबा का राजा शाल्व के पास से निराश होकर लौटना तथा भीष्म को सारा वृत्तान्त कह सुनाना। इस प्रकार की विषयवस्तु भाग 1 में पठित है।

भाग 2 की कथावस्तु में अंबा का सौभराज शाल्व के पास से निराश लौटने पर भीष्म को अपने प्रति जिम्मेदार बताते हुए उनके समक्ष विवाह प्रस्ताव रखना परंतु भीष्म द्वारा अंबा को अपनी प्रतिज्ञा याद दिलाकर पुनः राजा शाल्व के पास भेज दिया जाना। शाल्व द्वारा पुनः अस्वीकार किए जाने पर अंबा का लाचार होकर छह वर्ष तक इधर-उधर भटकते रहना फिर क्रोधित होकर भीष्म से प्रतिहिंसा के भाव से ब्राह्मणों से सहायता की याचना करना तथा उनके सुझाव पर महर्षि परशुराम की शरण में जाना और भीष्म के वध की इच्छा प्रकट करना। इसके पश्चात परशुराम और भीष्म में घोर युद्ध तथा परशुराम ने हार मानकर अंबा को भीष्म की ही शरण में जाने को कहा। अंत में अंबा का तपोबल द्वारा पुरुष शरीर प्राप्त करना तथा युद्ध में अर्जुन के पक्ष से खड़े होकर भीष्म का आहत होकर गिरने पर उसका क्रोध शांत होना। इस प्रकार की कथावस्तु की शेष चर्चा इस भाग 2 में वर्णित है।

अंबा और भीष्म

सारांश भाग 2

अंबा हस्तिनापुर लौट आई और भीष्म को सारा हाल कह सुनाया। विचित्रवीर्य भी अंबा से विवाह करने को तैयार नहीं हुए। अंबा ने भीष्म से कहा कि वह उनसे विवाह कर ले क्योंकि वह उन्हें हर कर लाए हैं। भीष्म ने अंबा को अपने प्रतिज्ञा की याद दिलाई और विचित्रवीर्य को अंबा से विवाह करने के लिए फिर मनाया परंतु वे तैयार नहीं हुए। भीष्म ने अंबा को राजा शाल्व के पास फिर से जाने को कहा परंतु शाल्व ने अंबा को फिर अस्वीकार कर दिया। अंबा छह वर्षों तक सौभदेश और हस्तिनापुर के बीच ठोकरें खाती रही। इन सब का कारण अंबा ने भीष्म को ही माना। भीष्म से बदला लेने के लिए वह कई राजाओं के पास गई और भीष्म से युद्ध कर उन्हें हराने का आग्रह किया परंतु इसके लिए कोई राजा तैयार नहीं हुआ।

आखिर में तपस्वी ब्राह्मणों की सलाह पर अंबा परशुराम के पास गई। अंबा की दुखभरी कथा सुनकर परशुराम का हृदय पिघल गया और वह अंबा की प्रार्थना पर भीष्म से युद्ध के लिए तैयार हो गए। भीष्म और परशुराम के बीच कई दिनों तक युद्ध चला परंतु कोई नतीजा नहीं निकल सका। अंत में परशुराम ने अंबा को भीष्म की शरण में जाने को कह दिया। अंबा हार मानने वालों में से नहीं थी। उसने वन में जाकर कड़ी तपस्या की और तपोबल से पुरुष रूप छोड़कर स्त्री रूप में परिवर्तित हो गई और अपना नाम शिखंडी रख लिया। जब कुरुक्षेत्र में कौरव-पांडवों के बीच महाभारत का युद्ध हुआ तो शिखंडी रथ के आगे आकर खड़ा हो गया और अर्जुन उसके पीछे। भीष्म को ज्ञात हो गया था कि शिखंडी ही अंबा है इसलिए उन्होंने उसपर बाण चलाना अपनी वीरोचित प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझा। अर्जुन ने शिखंडी के सहारे पीछे से हमला कर भीष्म को परास्त किया और उन्हें भूमि पर गिराया तब जाकर अंबा का क्रोध शांत हुआ।

धन्यवाद